

जल ही जीवन है

एल. एस. सोलंकी,
उप मुख्य अधिकारी (राजभाषा)

इस दुनिया का तीन-चौथाई हिस्सा, पानी से परिपूर्ण है, पानी के स्रोत के रूप में समुद्र के अतिरिक्त अनेक नदियाँ मौजूद हैं, झीलें हैं, झरने हैं, कुएं हैं और आजकल जगह - जगह लगाए जा रहे ट्यूबवैल और सबमर्सिबल पम्प्स हैं, देखा जाए तो दुनियाँ में पानी का कितना असीमित भण्डार हैं फिर भी आज पानी की जितनी कमी महसूस की जा रही है, शायद इससे पहले इतनी कमी कभी महसूस नहीं की गई. सुबह - सुबह समाचार पत्र खोलते ही पानी की कमी से संबंधित अनेक समाचार एवं लेख हमें पढ़ने को मिल जाते हैं. हर जगह पानी के लिए त्राहि - त्राहि मची हुई है, एक समय वह था जब लोग आम रास्तों पर पानी की प्याऊ लगाते थे मगर आजकल तो हालत यह हो गयी है कि पीने योग्य पानी को हम क्रय कर पीने के लिए मजबूर हो गए हैं,, कुछ स्थानों पर तो पैसे देकर भी पानी उपलब्ध नहीं हैं तालाब और नदियां धीरे - धीरे सूखते जा रहे हैं. जिन घरों में पूर्व में पानी की 24 घंटे आपूर्ति होती थी, उन घरों में अब कुछ ही देर के लिए पानी की पाइपें गीली होती हैं, अगर पानी के अपव्यय एवं दुरुप्रयोग की यही हालत कुछ वर्ष और रही तो संभवत पानी भी राशन की दुकानों पर ही मिलेगा।

जल चिन्तन करते समय हम यह देखते हैं कि समुद्र में पानी का अथाह भण्डार उपलब्ध है मगर समुद्र का पानी क्षारीय होने के कारण पीने योग्य नहीं होता और न ही कृषि के लिए उपयुक्त होता है मगर समुद्र के पानी के अतिरिक्त जो पीने योग्य पानी है और कृषि कार्यों के लिए भी उपयुक्त है।

इस संबंध में सबसे पहले हम नदियों के पानी की चर्चा करते हैं। हमारे देश में छोटी और बड़ी अनेक नदियां हैं। यदि इन नदियों से प्राप्त जलसम्पदा का ठीक प्रकार से पदियों की सम्पूर्ण क्षमता के अनुसार प्रयोग किया जाये तो देश के बड़े भू-भाग पर पानी की कमी को दूर किया जा सकता है। मगर हमें पानी के महत्व का पता ही नहीं है इसलिए नदियों को इतना प्रदूषित कर दिया है कि नदी का पानी पीने के योग्य तो कदापि नहीं रह गया है। नदी के पानी में मल त्याग/सफाई के अलावा शवों को बहाना, नगर - नगर गंदे नालों का नदियों में गिरना एवं अनगिनत कारखानों के रसायन युक्त अवशेषों का नदी में गिरना आदि ऐसे कारण हैं जिन्होंने नदियों से प्राप्त होने वाले पानी के अपार भण्डार को प्रयोग के लायक ही नहीं रहने दिया है। इतना ही नहीं, नदियों में बहने वाले जल का भी हम न तो प्रयोग कर पा रहे हैं और न ही संग्रहण। यदि सही योजना बनाकर इस जल को देश के विभिन्न हिस्सों में नहरों के माध्यम से संवितरित किया जाए तो समस्त जल का प्रयोग सम्भव है (हालांकि नहरों के निर्माण का कुछ कार्य हुआ तो है पर वह काफी नहीं है) मगर इसके विपरीत हमारी कितनी ही नदियों का पानी समुद्र में जाकर मिल जाता है और नष्ट हो जाता है। अतः नदियों के जल को संरक्षित करने एवं प्रदूषण से बचाने के आवश्यकता है।

झीलों की हालत तो इससे भी अधिक खराब है। झील एवं तालाबों का पानी बरसाती एवं रूका हुआ होता है। जहां तालाब, अधिक गर्मी पड़ने पर सूख जाते हैं वहीं झीलों पानी की अधिक भण्डारण क्षमता के कारण जलमय बनी रहती हैं मगर वस्तुस्थिति यह है कि अधिकांश झीलों के पानी का उपयोग पीने के पानी के लिए नहीं अपितु व्यावसायिक रूप में पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए नौका-विहार के लिए किया जा रहा है। पर्यटकों ने झीलों के पानी को इतना प्रदूषित कर दिया गया है कि झील के पानी को एकबार पीकर ही आदमी

बीमार अवश्य हो जाएगा. झील में आपको यहां - वहां पॉलीथीन को थैलियाँ, खाने के वस्तुएं, कागज की नाव एवं पेय पदार्थों की बोतलें एवं पैकिंग के अलावा ऐसी - ऐसी वस्तुएं तैरती हुई दिखाई देंगी जिनकी कि आप कल्पना तक नहीं कर सकते. नदियों एवं झीलों में समय - समय पर बड़ी संख्या में मछलियों के एक साथ मरने के समाचार हमने पढ़े ही है इस प्रकार मछलियों की एक साथ मृत्यु क्या अकारण होती है ? जी नहीं, इसके लिए दोषी है हमारे द्वारा किया गया जल-प्रदूषण ।

झरनों का पानी केवल पहाड़ी क्षेत्रों में ही प्राप्य है. बर्फ, जब पिघलकर पहाड़ से नीचे गिरती है तो वह झरनों का रूप ले - लेती है, झरनों के पानी को, झरने के स्थान, के अनुसार कभी संरक्षित किया जा सकता है और कभी प्राकृतिक दुरुहता के कारण नहीं. मगर जिन स्थानों पर झरनों के पानी को संरक्षित किया जा सकता है, वहां भी हमारे प्रयास नाकाफी ही प्रतीत होते है. और फिर वास्तविक रूप में देखा जाये तो झरने हमारे लिए जल के स्रोत से अधिक पर्यटक स्थल अधिक झरनों के पास पहुंचकर भी लोग झरने का नहीं, बोतलों अथवा पानी की थैलियों का ही पानी पीते हैं.

कुंए, ट्यूबवैल, हैंडपम्प एवं सबमर्सिबल पम्पस एवं पवन चक्की आदि वैयक्तिक स्तर पर पानी प्राप्त करने हेतु प्रयोग किए जाने वाले वैकल्पिक साधन हैं. क्षमतावान एवं धनी लोग पैसे से कुछ भी क्रय कर सकता है मगर देश की 100 करोड़ की आबादी बोतलबंद पानी नहीं पी सकती. एक चार-पांच व्यक्तियों का सामान्य सा परिवार गर्मी के दिनों में कम से कम पांच से सात लीटर पानी पी जाएगा. क्या एक आदमी के लिए, जिसके पास खाने के लिए भी ठीक-टाक व्यवस्था न हो, वह क्या इतना पानी क्रय कर पाएगा ? कभी नहीं, उसे तो

सामान्य पानी ही पीना है जो कि उसे उपलब्ध नहीं हो पा रहा है. यदि स्वयं की जमीन न हो तो कुआं कहां खोदेगा ? हैण्डपम्प कहां लगाएगा ? जमीन हो अथवा न हो, मगर जीने के लिए पानी तो हर किसी को अपेक्षित है .

बिजली का निर्माण पानी से ही होता है जिसके लिए जगह - जगह बांध निर्मित किए गए हैं . जरा सोचिए, आजकल के समय में क्या हम बिजली के बिना एक दिन भी रह सकते हैं जी नहीं. हम खाने के बिना तो एक आध दिन रह सकते हैं मगर बिजली के बिना नहीं बिना बिजली के तो जैसे हर कार्य बंद हो जाएगा, जीवन थम सा जाएगा. बिना बिजली के न पंखे चलेगें, न टेलीविजन, न कम्प्यूटर और न ही रेलगाडियां और न जाने क्या क्या और उसी बिजली के निर्माण के लिए सबसे अहम चीज है ... पानी. जिसके उपलब्ध होते हुए भी हमने उसे प्रयोग के लायक नहीं रहने दिया है . जहां - जहां पानी है, वहां वहां, धोबी भी हैं. यदि ऐसा कुछ होता तो घोबियों के लिए कपड़ं घोने के लिए पृथक से को व्यवस्था की जाती तो सारा का सारा जल भण्डार क्यों प्रदूषित होता. मगर हमारी पुरानी आदत है कि हम केवल चिन्तन कर सकते है मगर स्वयं कुछ नहीं कर सकते. शायद हम लोगों में से अधिकांशतः

इसके अलावा हमारे पास पानी का एक और बहुत अच्छा स्रोत उपलब्ध है, वह है बरसात का पानी. मगर हमारे देश में बरसात के पानी को संरक्षित करने की अभी तक कोई उचित प्रणाली मौजूद नहीं है. पहले तो वनों की निरन्तर कटाई के फलस्वरूप बरसात ही बहुत कम होने लगी है और जब बरसात होती भी है तो वह सारा का सारा पानी, बिना किसी प्रयोग में आए ही, बह जाता है . हम कह सकते हैं कि बरसाती पानी का वह अपार भण्डार निरर्थक ही नष्ट हो जाता है . नष्ट होते होते भी यह कुछ क्षेत्रों में हर साल बाढ के रूप

में अपना विकराल रूप भी दिखा जाता है. यदि अधिक वर्षावाले क्षेत्रों में बांध एवं नहरें बना दी जाएं तो इस पानी का उपयोग किया जा सकता है. और कम वर्षा वाले क्षेत्रों में अधिक वृक्षारोपण के द्वारा अधिक बरसात प्राप्त की जा सकती है जिससे कि उन क्षेत्रों में पानी की कमी को दूर किया जा सके. मगर शुरूआत कौन करे ? और जब तक हम बरसात के पानी को संरक्षित करने को ज्ञान नहीं प्राप्त कर लेते, तब तक बरसात का लाभ ही क्या है ? कुछ नहीं .

अब प्रश्न यह उठता है कि किया क्या जाए . इस संबंध में. कुछ उपाय जो मेरी अल्पबुद्धि में आ रहे हैं वे निम्नवत हैं -

1. सबसे पहले तो नदियों को प्रदूषण से बचाया जाये जिससे कि नदियों के पानी को पीने के उपयोग में लाया जा सके. नदियों में गिरने वाले गन्दे नालों आदि का नदियों में गिरने से रोका जाए. नदियों में शवों को न बहने दिया जाये.
2. नदियों से प्राप्त हो रही समस्त जलराशि को उपयोग में लाने के प्रयास किए जाएं. जिन नदियों का पानी समुद्र में जाकर गिरता हो, उन नदियों से छोटी-छोटी नहरें बना दी जाएं जिससे कि कृषि हेतु पानी का उपयोग किया जा सके और नदियों के पानी को संरक्षित किया जा सके।
3. कम वर्षा वाले क्षेत्रों में सघन वृक्षारोपण किया जाए. वृक्षारोपण के फलस्वरूप न बल्कि उस क्षेत्र का तापमान अनुकूल होगा अपितु बरसात भी अधिक होगी. इसके अतिरिक्त भी देश के प्रत्येक भाग में नियमित वृक्षारोपण किया जाए. वृक्षारोपण करने हेतु नई एवं प्रभावी योजनाएं बनाकर उन्हें लागू किया जाये

4. बरसात के पानी को संरक्षित करने की प्रणाली अविलम्ब प्रचलन में लाई जाए एवं इसे प्रत्येक नए भवन निर्माण के साथ अनिवार्य कर दिया जाए. (छतों पर गिरने वाले बरसात के पानी को, उसी भवन में एकत्र कर पुनः फिल्टर करके प्रयोग में लाए जाने के कुछ उदाहरण हमने देखे हैं, जोकि बहुत उपयोगी सिद्ध हो रहे हैं, इस प्रणाली को तुरन्त विकसित किया जाए एवं प्रचलन में लाया जाए.)
5. बरसात के पानी को यदि भवन में एकत्र करने की समुचित व्यवस्था न हो तो इस पानी को भू-गर्भ में भेजे जाने की प्रणाली लागू की जाए जिससे कि उस स्थान का भू-गर्भ जल स्तर ऊँचा बना रहे और आवश्यकतानुसार भूगर्भ जल का प्रयोग किया जा सके
6. अत्यधिक वर्षा वाले क्षेत्रों में बांध बनाए जाएं और बिजली उत्पादन के संयंत्र लगाए जाएं जिससे कि पानी के संग्रहण एवं बिजली के उत्पादन, दोनों का, दोहरा लाभ प्राप्त हो सके.
7. समुद्री इलाकों में, समुद्री जल की क्षारीयता एवं अम्लता को नष्ट कर उसे प्रयोगानुकूल बनाकर प्रयोग किया जाए. पानी की कमी को देखते हुए यह प्रयास हमें आज नहीं तो कल करना ही होगा. फिर क्यों न आज ही किया जाए .
8. जनता को पानी के महत्व से नियमित रूप से अवगत कराया जाए एवं समय-समय पर पानी को प्रदूषित न करने संबंधी विज्ञापन जारी किए जाएं.
9. प्रदूषण के लिए संवेदन शील स्थानों पर प्रदूषण-सुरक्षा संबंधी उपाय अपनाए जाएं .

10. कपड़े धोने के लिए पृथक व्यवस्था की जाए जिससे कि कपड़ें भी धुल सकें और धोबियों का रोजगार भी प्रभावित न हो तथा जल प्रदूषण न हो .
11. उपरोक्त सभी कार्य तब ही संभव हों, जब लोग इनके महत्व को समझ सकें, इसके लिए लोगों का शिक्षित होना बहुत जरूरी है । अतः आम जनता को शिक्षित करने के प्रयास भी साथ-साथ ही जारी रखने होंगे.

उपरोक्त चिन्तन करने के उपरान्त हम यह पाते हैं कि पानी के प्रयोग एवं संरक्षण के प्रयास दो प्रकार की प्रकृति के हैं एक तो वह जोकि वैयक्तिक स्तर पर किये जा सकते हैं, जैसे कि वृक्षारोपण करना, प्रदूषण न करना तथा दूसरे प्रयास ऐसे हैं जिन्हें कि सरकार स्तर पर अथवा संस्थागत स्तर पर ही किया जा सकता सम्भव है जैसे कि बांध बनाना, बिजली उत्पादन संयंत्र लगाना आदि. अतः दोनों ही स्तरों पर अपने प्रयास करने होंगे. तब ही हमें भविष्य में पानी उपलब्ध हो सकेगा अन्यथा नहीं .

महाकवि तुलसीदास जी ने रामचरित मानस में लिखा है कि:

क्षिति, जल, पावक, गगन समीरा, पंचतत्व मिल बना सरीरा. (सरीरा अर्थात् शरीर)

तुलसीदास जी की उपरोक्त चौपाई से यह स्पष्ट है कि जीवन के लिए पानी, बांछित तत्वों में से एक है. उपरोक्त पांचों तत्वों में से एक का भी अभाव होता है तो जीवन नष्ट हो जाएगा. यदि समीर (यानी हवा रूपी सांस) नहीं मिली तो जीवन नष्ट और यदि पानी नहीं मिला तो जीवन नष्ट. तो फिर क्यों न

हम अभी सचेत होकर कार्य करें और पानी के महत्व को समझते हुए इसका अपव्यय न करें और इसे प्रदूषित न करें .

अन्त में, यही कहना चाहूँगा कि किसी भी लम्बी दूरी की यात्रा को तब ही पूरा किया जा सकता है जबकि उसे आरम्भ किया जाए. जब तक यात्रा के लिए पहला कदम नहीं उठाया जाएगा, तब तक उस यात्रा को पूरा करना एक स्वप्न मात्र ही रहेगा. इसी प्रकार जल संरक्षण के क्षेत्र में, जल संरक्षण से संबंधित केवल योजनाएं तैयार करना, यात्रा की योजना बनाने के समान है जब तक उन योजनाओं को प्रभावी रूप से क्रियान्वित न किया जाए.

आइए, हम सभी, जल संरक्षण हेतु अपने-अपने स्तर पर अपना योगदान देने को संकल्प करें .